गणगौर की ढेर सारी शुभकामनाएं
हिंदू नववर्ष नव संवत्सर विक्रम संवत 2081

गज़ल

यार वही पुराना चाहिए

उसी से मिलने मिलाने का बहाना चाहिए
इस नए साल में भी यार तो पुराना चाहिए।

ये मोहब्बत एक खोटा सिक्का है तो क्या
अरे जब तक चल सके इसे चलाना चाहिए।

आग कभी भी अपनी या पराई नहीं होती
उससे रिश्ता तो सलीके से निभाना चाहिए।

समझदारी से इश्क ये फिज़ूल की बात है
इसके खातिर तो बस कोई दीवाना चाहिए।

हो जैसा भी लेकिन होना बेहद ज़रूरी है
आख़िर आवारगी को भी ठिकाना चाहिए।

बताने को तो बता दूँ मैं अभी नाम उसका
पर ऐसी बातों को अक्सर छुपाना चाहिए।

हमेशा नशे में रहूँ यह तो अच्छी बात नहीं
पर गाहे बगाहे पीना और पिलाना चाहिए।

जब कभी जिक्र मेरा और बात उसकी हो
तो बेशक एक सिगरेट और जलाना चाहिए ।

शुभ नवरात्रि

गणगौर की ढेर सारी शुभकामनाएं
हिंदू नववर्ष नव संवत्सर विक्रम संवत 2081

मेरे हिस्से की ज़मीन

मेरे हिस्से की ज़मीन तुमने दबाई है
हर घर में इसी बात की तो लड़ाई है।

दो अक्षर पढ़के बच्चे सयाने हो गए
उनके ओठों पे सिर्फ अपनी बड़ाई है।

मेरे लबों को अपने लबों पे रख बोली
खा लो तुम्हारी पसंदवाली मिठाई है ।

अब जब कि शॉपिंग हॉबी कहलाती है
हमने कमीज़ कल ही तो रफ्फू कराई है।

लोग लाखों करोड़ों में नीलाम हो खुश हैं
यही ख़बर लगभग हर अखबार में आई है ।

शुभ नवरात्रि

नयी गूँज

मजबूरियाँ बेड़ियाँ बन

मजबूरियाँ बेड़ियाँ बन पाँव से लिपट जाती हैं
परदेश में मेरी दुनियाँ कितनी सिमट जाती है।

वहाँ दिन रात कितना कुछ कहते सुनते थे हम
यहाँ पराई बोली के आगे ज़ुबान अटक जाती है।

यहाँ अकेले अब वो इस कदर याद आती हैं कि
उन्हें सोचते हुए पूरी रात यूँ ही निपट जाती है।

अब इन सर्द हवाओं में अकेले यहाँ दुबकते हुए
उसके हाँथ की चाय मेरे हाथों से छटक जाती है।

गुल गुलशन शहद चाँदनी वैसे तो सब है लेकिन
वो ख़्वाब में आकर मुझे प्यार से डपट जाती है।

रुख जिधर का है

रुख जिधर का है सूखे पत्ते तो उधर ही उड़ जायेंगे
हमारा मसला अलग है लड़ना पड़ा तो लड़ जायेंगे ।

मेरी हर शिकायत पर वो बेफिक्री से हँसते रह गए
हमनें तो सोचा था कि शायद वो शर्म से गड़ जायेंगे ।

देनेवालों का मलाल तो लेनेवालों का यह कमाल है
कभी तकादा जो किया तो उल्टे हमीं पर चढ़ जायेंगे ।

अभी तो बस देखता हूं उन्हें उन्हीं की नजरें बचाकर
इश्क में हौसला कायम रहा तो बढ़ते बढ़ते बढ़ जायेंगे।

आवारगी साथ रही इसलिए कुछ हासिल होता रहा
सलीकेवाले तो जहाँ थे लगता है कि वहीं सड़ जायेंगे।

डॉ मनीष कुमार मिश्रा